MASA-05

June - Examination 2016

M.A. (Final) Sanskrit Examination

गद्य तथा काव्य

Paper - MASA-05

Time : 3 Hours] **[Max. Marks :- 80**

Note: The question paper is divided into three sections A, B and C. Write answers as per the given instructions.

निर्देश : यह प्रश्न पत्र 'अ', 'ब' तथा 'स' तीन खण्डों में विभक्त है। प्रत्येक खण्ड के निर्देशानुसार प्रश्नों के उत्तर दीजिये।

खण्ड – 'अ' **$8 \times 2 = 16$**

(अति लघु उत्तरीय प्रश्न)

निर्देश : सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिये। आप अपने उत्तर को प्रश्नानुसार एक शब्द, एक वाक्य या अधिकतम सीमा 30 शब्दों में परिसीमित कीजिये। प्रत्येक प्रश्न 2 अंकों का है।

1) (i) 'शिवमहिम्नः स्तोत्र' के रचयिता का नाम बताइये।

(ii) महाकवि बाणभट्ट की गद्य रचना का नाम बताइये।

(iii) 'माघे सन्ति त्रयो गुणाः' में किन तीन काव्यशास्त्रीय गुणों का समाहार हुआ है?

(iv) 'शिशुपालवधम्' महाकाव्य का उपजीव्य कौनसा ग्रन्थ है?

(v) युधिष्ठिर श्रीकृष्ण को किस यज्ञ के लिये आमन्त्रित करते हैं?

(vi) 'विक्रमांकदेवचरितम्' में कितने सर्ग है?

(vii) महाकवि बिल्हण कहाँ के निवासी थे?

(viii) विक्रमांकदेवचरितम में किस राजा के चरित्र का वर्णन प्रमुखता से हुआ है?

(खण्ड – ब) **$4 \times 8 = 32$**

(लघु उत्तरीय प्रश्न)

निर्देश : किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए। आप अपने उत्तर को अधिकतम 200 शब्दों में परिसीमित कीजिये। प्रत्येक प्रश्न 8 अंकों का है।

2) किसी एक गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिये।

नाम्नैव योनिर्भिन्नारातिहृदयोविरचितनर सिंह–रूपाडम्बरम्, एक विक्रमाक्रान्त सकलभुवनतलो विक्रमत्रयायासितभुवनत्रयंजहासेववासुदेवम्। अतिचिरकाल लग्न मतिक्रान्तकुनृपति सहस्रसम्पर्क–कलङ्कमिव क्षालयन्ती यस्य विमले कृपाण धाराजले चिरमुवास राजलक्ष्मी:।

अथवा

तत्रच शाखाग्रेषु कोट रोदरेषु पल्लवान्तरेषु स्कन्ध सन्धिषु जीर्णवल्कलविवरेषु च महावकाशतया विश्रब्ध–विरचित–कुलायसहस्राणि दुरारोहतया विगलितविनाशभयानि नानांदेश समागतानि शुक–शकुनि कुलानि प्रतिवसन्ति स्म।

3) निम्न लिखित श्लोक की सप्रसंग व्याख्या कीजिये।

यावदर्धपदांवाचमेवमादाय माधवः। विरराम महीयांसः प्रकृत्या मितभाषिणः।।

अथवा

वचांसि वाचस्पतिमत्सरेण साराणिलब्धुं ग्रहमण्डलीव।
मुक्ताक्ष सूत्रत्वमुपैति यस्याः सासप्रसादास्त्रु सरस्वतीवः।।

4) निम्नलिखित श्लोक की संस्कृत में व्याख्या कीजिये।

नैतल्लध्वपि भूयस्यावचो वाचाऽतिशय्यते।
इन्धनोधधगप्यग्निस्त्विषानात्येति पूषणम्।।

5) निम्नलिखित श्लोक की संस्कृत में व्याख्या कीजिये।

गृह्णन्तु सर्वे यदिवा यथेष्टंनासित क्षतिः कापिकवीरश्वराणाम्।
रत्नेषु लुप्तेषु बहुष्वमर्त्यैरद्यापि रत्नाकर एव सिन्धुः।।

6) कादम्बरी वर्णित जाबालि आश्रम का वर्णन कीजिये।

7) 'शिवमहिम्न स्तोत्र' का माहात्म्य बताइये।

8) 'विक्रमांकदेवचरितम्' के प्रथम सर्ग का सार लिखिये।

9) 'शिशुपाल वधम्' के द्वितीयसर्ग में श्रीकृष्ण–बलराम तथा उद्धव के मध्य हुई मन्त्रणा का विवेचन कीजिये।

(खण्ड – स) $2 \times 16 = 32$

(दीर्घ उत्तरीय प्रश्न)

निर्देश : किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिये। आपको अपने उत्तर को अधिकतम 500 शब्दों में परिसीमित करना है। प्रत्येक प्रश्न 16 अकों का है।

10) महाकाव्य के लक्षणों के आधार पर 'शिशुपाल वधम्' महाकाव्य की समीक्षा कीजिये।

11) 'महाकवि बाणभट्ट की काव्यकला को प्रतिपादित कीजिये।

12) 'विक्रमांकदेवचरितम्' एक ऐतिहासिक महाकाव्य है। इस कथन की समीक्षा कीजिये।

13) 'शिवमहिम्नः स्तोत्र' का सार प्रस्तुत करते हुए उसमें प्रतिपादित शिव के स्वरूप पर प्रकाश डालिये।